कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

हिन्दु नववर्ष
संवत 2078

नए वर्ष में नई पहल हो,
कठिन ज़िंदगी और सरल हो।
अनसुलझी जो रही पहेली,
अब शायद उसका भी हल हो।।

जो चलता है वक्त देखकर,
आगे जाकर वही सफल हो।
नए वर्ष का उगता सूरज,
सबके लिए सुनहरा पल हो।।

समय हमारा साथ सदा दे,
कुछ ऐसी आगे हलचल हो।
सुख के चौक पुरें हर द्वारे,
सुखमय जीवन का हर पल हो।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 32, अंक 1
जनवरी-मार्च 2021 (विक्रम संवत् 2078)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- सर्व जगत में सबसे न्यारा, ... 2
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के ... 3
- गौसेवा सह वनभोज कार्यक्रम 5
- कल्याण आश्रम स्वयं को... 7
- जीवन को ऊंचा उठाने का मार्ग ह... 9
- मिशन विद्या-2 10
- प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद... 11
- अनुकरणीय 13
- बेलपहाड़ी छात्रावास के पूर्व छात्र... 14
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर... 15
- बोधकथा 16
- कविता .... वन संस्कृति... 16

सर्व जगत में सबसे न्यारा, विक्रम संवत् धन्य हमारा

यूं तो वैश्विक स्तर पर 1 जनवरी से नव वर्ष का प्रारंभ माना जाता है और अन्य महीने उसी के अनुसार निर्धारित होते हैं। किंतु उस दिन नववर्ष का उत्साह सहज रूप में कहां प्रस्फुटित हो पाता है? अंग्रेजी ढंग का नव वर्ष तब शुरू होता है जब जड़-चेतन में कहीं भी नवता का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ता है। सर्दी के प्रकोप से सब कुछ ठिठुरा होता है। पाश्चात्य संस्कृति में अनुरक्त लोग इस दिन कृत्रिम आनंद पाने के लिए होटल बार आदि रंगीन स्थलों पर एकित्रत होकर शोर शराबा करते हैं, शराब पीते हैं, मदमस्त होते हैं और 12 बजते ही नए साल की जय बोलने लगते हैं। अर्थात् नया वर्ष उनके लिए सिर्फ इंद्रिय सुख का माध्यम बनता है। उनकी आंखों में नए वर्ष के सृजन स्वप्न नहीं उगते। उनकी चेतना में नववर्ष संबंधी सामाजिक मंगलाकांक्षा के चित्र नहीं बनते। उनकी चेतना वैयक्तिक सुखों में सिमटी होती है। किंतु नव संवत्सर पर लगता है कि प्रकृति और जीवन दोनों में नवता का संचार हो रहा है। एक प्रीतिकर ऊष्मा जागने लगती है। मन की सिकुड़न टूटने लगती है और उसमें फैलने लगती है गीतात्मक उमंग और उल्लास। इस समय धरती नया बाना धारण करती है। वनस्पति और सृष्टि प्रस्फुटित होती है - पक्के मीठे अन्न के दानों में, आम की मन को लुभाती खुशबू में, गणगौर पूजती कन्याओं और सुहागिन नारियों के हाथों की हरी-हरी दूब में, बसंत दूत कोयल की गूंजती स्वर लहरी में। चारों ओर पकी फसल का दर्शन आत्मबल और उत्साह को जन्म देता है। ईस्वी सन् के विरुद्ध विक्रम् संवत्सर की पुन: प्रतिष्ठा के लिए हमारे आग्रह में विवेकहीन पक्षपात जैसी या अपनी परंपराओं के प्रति अंधभक्ति का दुराग्रह जैसी कोई भावना काम नहीं कर रही है। हमारे अपने संवत्सर को पुन: प्रतिष्ठित करने का आग्रह इसलिए है कि संसार में इस समय प्रचलित सभी कालगणनाओं की तुलना में विक्रम संवत्सर की कालगणना अधिक प्रामाणिक, वैज्ञानिक, यथार्थ और निर्दोष है। प्राचीन काल में हमारा देश वैज्ञानिक उन्नति में सिरमौर था इस कारण काल या समय को नापने का सबसे छोटा और सबसे बड़ा पैमाना भी हमारे पास था। समूचे ब्रह्मांड में स्थित गृह गोलों की गति और कोणों की गणना भारत ने अधिकारपूर्वक की और उसे मानव के सामान्य स्तर की दैनंदिन घटनाक्रम से जोड़ दिया।

भारत की काल गणना का विज्ञान न केवल सबसे प्राचीन है अपितु सर्वश्रेष्ठ भी होने का इसे गौरव प्राप्त है! दुर्भाग्य यह है कि दीर्घकाल तक विदेशी सत्ता के दुष्प्रभाव के कारण न केवल हम अपने ज्ञान विज्ञान से विमुख हुए बल्कि आत्म गौरव शून्य होकर अपने ज्ञान की हंसी उड़ाने में ही अगुआ बन गए। देसी माटी में बीज को फलने के लिए देसी खाद ही उपयुक्त होती है। विदेशी खाद से भले एक बार अधिक फसल आती दिखाई दे किंतु न तो उस फसल में वह जीवनी शक्ति होगी जो देसी खाद से सहज प्राप्त होती है और ना ही उस भूमि की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहेगी। आइए हम सब अपनी परंपरागत कालगणना को पुन: जीवंतता प्रदान करें, संस्कार क्षमता बढ़ायें और पश्चिम का अंधानुकरण छोड़े। कोरोना की दूसरी लहर का कहर पुन: डराने लगा है। आइए संकल्प ले कि नए संवत्सर में हम मानवता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने में कोई कोताही नहीं करेंगे। विवेकपूर्ण ढंग से अनीति और भोगवाद को टक्कर देंगे। पूरा देश मिलजुल कर तमाम चुनौतियों और कोरोना को मात देने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन करेगा। पुनश्च सभी को हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत 2078 की अनेकश: शुभकामनाएं। इति शुभम्।

- स्नेहलता बेद

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त जनजाति मातृशक्ति की गौरव गाथा

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएँ,
जिनकी गौरव – गाथा से सहमी
धरती रही अभी तक डोल,
कलम आज उनकी जय बोल!

लेखनी स्वयं को धन्य मानेगी और अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की सार्थकता और भी बढ़ जाएगी यदि गाथा जुड़ जाए पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त जनजाति मातृशक्ति की। कुछ दिनों पूर्व भारत सरकार के पद्मपुरस्कारों की घोषणा हुई । हम सभी के लिए हर्ष और गर्व की बात यह है कि इन पुरस्कारों में छह जनजाति महिलाओं को भी पद्मश्री से सम्मानित किया गया है । इन सभी कर्तृत्वशालिनी महिलाओं का वनवासी कल्याण आश्रम से गहरा संबंध रहा है। कल्याण आश्रम के विभिन्न कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर अपना बहुमूल्य समय वनवासियों के उत्थान के लिए दिया है। जंगल, वन – पर्वतों में रहकर, जिन्होंने अपनी गौरवशाली संस्कृति, परंपरा का संरक्षण एवं संवर्धन कर भारत के सम्मान को बढ़ाया है ऐसी सभी महिलाओं के कर्तृत्व को हम शत–शत नमन करते हैं और उनका संक्षप्ति परिचय देकर स्वयं को धन्य करना चाहते है।

परिचय की श्रृंखला में सर्वप्रथम गुरू माँ **कमली जी सोरेन** हैं जो पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के जनजाति क्षेत्र की एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता हैं। अपने धर्म, संस्कृति परंपरा के बारे में संपूर्ण जनजाति समाज

गुरू माँ कमली जी सोरेन

में चेतना का जगरण करने के लिए आपने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है। **श्रीमती वीरुबाला राभा** ने असम में सालों साल से चल रही डायन प्रथा के

श्रीमती वीरुबाला राभा

खिलाफ वीरुबाला जी ने लंबा संघर्ष किया। आपके निरंतर संघर्षरत रहने के कारण ही इस समाजघातक प्रथा का संपूर्ण विनाश संभव हो पाया। डायन प्रथा से पीड़ित अनेक महिलाओं को समाज जागरण और संघर्ष

के माध्यम से मुक्ति दिलाई। मिजोरम की आइजोल की प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता **संगखुमी बुआलछुआ**

संगखुमी बुआलछुआ

को उनके महिला सशक्तीकरण के लिए किए गए कार्य के लिए इस बार भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। उड़ीसा के कंधमाल जिले में रहने वाली 85 वर्षीया **पूर्णामासी जानी** एक अद्भुत व्यक्तित्व की धनी हैं। किसी भी औपचारिक शिक्षा को न लेते हुए भी लगभग 50 हज़ार उड़िया और संस्कृत भाषा में आपने पारंपरिक लोकगीत लिखे हैं। अनेक विद्वानों ने उनके गीतों पर डॉक्ट्रेट किया है। माउंट एवरेस्ट जैसे विश्व के सबसे ऊँचे शिखर पर

पूर्णामासी जानी

एक ही सीजन में दो बार चढ़ाई करने और विश्वविक्रम करने वाली एकमात्र महिला **अंशु जासेंपा** एक जांबाज

अंशु जासेंपा

पर्वतारोही मानी जाती है। अरुणाचल प्रदेश के बोमड जिला में रहने वाली अंशु जासेंपा ने अब तक पाँच बार माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की है। मध्यप्रदेश के झाबुआ की प्रसिद्ध पिठोरा पेंटिंग को विश्वविख्यात करने में अहम भूमिका निभाने वाली **भूरी बाई** को इस बार

भूरी बाई

पद्मश्री से सम्मानित किया है। भूरी बाई के पिठोरा पेंटिंग की सराहना देश – विदेश के कलाकारों ने की है। पद्मपुरस्कारों से सम्मानित इन महिलाओं ने वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर अपने आशीषों से कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया है। सभी पुरस्कार प्राप्त महीयसी महिलाओं का शत-शत अभिनंदन! ■

गौसेवा सह वनभोज कार्यक्रम

- पवन केजरीवाल, सहमंत्री कोलकाता महानगर

कोरोना महामारी के संकट से ग्रस्त मानवता त्राहि-त्राहि करने लगी थी, लेकिन धीरे धीरे समय बदला, लोगों के मन से भय दूर होने लगा, कोरोना हारने लगा, मनुष्यता एक बार फिर करवट लेने लगी। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भगिनी बंधु भी आभासी बैठकों को छोड़ अब मुक्तांगन की ओर उन्मुख होने के लिए इच्छुक होने लगे थे।

कार्यकर्ताओं का मन पहचानकर, उनकी अंतरात्मा की आवाज सुनकर कल्याण आश्रम के पदाधिकारियों

ने कोलकता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं के सहयोग से दिनांक 21 फरवरी को **कामधेनु गौशाला सोद्पुर** में परिवार मिलन-गौ सेवा-वनभोज कार्यक्रम का आयोजन किया। सभी उपस्थित कार्यकर्ता बंधु-भगिनी, लगभग 180, ने कार्यक्रम तथा गौसेवा का भरपूर आनन्द लिया।

प्राकृतिक संपदा और गौमाता की पावन हुंकार से आवेष्टित परिसर में पहुँचते ही कार्यकर्ताओं ने सुस्वादु जलपान का आनंद लिया। संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री संजीव खैतान एवं श्री राजकुमार जैन ने तत्पश्चात तरह-तरह के लुभावने खेलों में कार्यकर्ताओं को सम्मिलित कर उनके आनंद को दुगुना कर दिया। नवाचार ने म्यूजिकल चेयर और बबल गेम से परिसर को हँसी ठहाकों से भर दिया। चारों तरफ सिर्फ और सिर्फ आनंद की मनोहारी छटा बिखरी पड़ी जा रही थी। क्या

बच्चे, क्या बूढ़े, क्या युवा सब अपनी आयु की सीमाओं को लाँघकर आनंदोत्सव की अप्रतिम सृष्टि कर रहे थे।

वनभोज के दूसरे चरण में सभी कार्यकर्ता बंधु गोसेवा के लिए निकल पड़े। गोमाता की सुंदर चमकती आँखों से झलकते प्यार और आशीर्वाद से सभी कार्यकर्ता बंधु अपने को अभिषिक्त कर रहे थे। अधिकांश कार्यकर्ता तो गोमाता के साथ अपनी छवि उतारकर अपने को सौभाग्यशाली मान रहे थे।

भोजन का समय आ पहुँचा। सभी ने मिलकर भोजन किया। परिसर के खेतों से लाई गई हरी सब्जियाँ भोजन का मुख्य आकर्षण थीं।

भोजनोपरांत पुन: खेल-खेल में परिचय का आयोजन हुआ। मनोरंजन से भरपूर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए सभी कार्यकर्ता तेज गति से भागते हुए समय को ही भूल गए।

संध्यावंदन का समय आ पहुँचा। मंदिर की घंटियों के साथ आरती संपन्न हुई। चायपान के उपरांत सुखद स्मृतियों को अपने हृदय में संजोए सभी कार्यकर्ता और आकाश में पक्षियों के झुंड अपने-अपने नीड़ों की ओर चल पड़े।

सुस्वादु भोजन की व्यवस्था पवन जी केजरीवाल ने की। कोलकाता महानगर के सह संगठन मंत्री श्री विमल मल्लावत के अथक प्रयासों एवं सभी कार्यकर्ताओं के सकारात्मक सहयोग से कार्यक्रम स्मरणीय बन गया। कल्याण आश्रम सभी के प्रति आभार और साधुवाद व्यक्त करता है।

जिस-जिस से पथ पर स्नेह मिला,
उस-उस राही को धन्यवाद... ■

कल्याण आश्रम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है...

- शंकर अग्रवाल, अ.भा.कोषाध्यक्ष एवं नगरीय कार्य प्रमुख

कहीं कोई दूर नहीं,
केवल समर्पण चाहिए।
कुछ कर गुजरने के लिए,
मौसम नहीं मन चाहिए।

प्रसिद्ध समाजसेवी और कर्तव्यपरायण कार्यकर्ता श्री निर्मल कुमार अग्रवाल को विचार मंच द्वारा **ग्राम्य सेवा सम्मान** सम्मानित किए जाने पर वनवासी कल्याण आश्रम परिवार गर्वित है, पुलकित है, हर्षित है।

एक दृष्टि श्री निर्मल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर

श्री निर्मल कुमार अग्रवाल ने आईआईटी खड़गपुर से 1985 मे कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा पूर्ण की। Tata Electric Company के R&D लैब में Software Consultant का कार्य करने के बाद वे अपने घर कोलकाता लौट आए। यहां इन्होंने अपनी एक इन्फोटेक कंसल्टेंसी कंपनी आरम्भ की, जो पूर्वी भारत की प्रतिष्ठित संस्थानों को कंप्यूटर नेटवर्किंग एवं कंप्यूटर सोफ्टवेयर की सुविधा प्रदान कराती है। IIT Kharagpur के सिद्धांत "**देश सेवा को समर्पित**" एवं "Learn-Earn-Return" से प्रभावित होकर इन्होंने 1992 से वनवासी कल्याण आश्रम में वनवासियों के उत्थान के लिए कई प्रकल्पों में भाग लेना शुरू किया।

सतत् विकास के पांच स्तंभ जन, जल, ज़मीन, जानवर और जंगल में से इन्होंने जन स्तंभ पर कार्य प्रारंभ करते हुए एक-एक करके बाकी स्तंभ की ओर बढ़े।

पश्चिम बंगाल के वनवासी क्षेत्रों में चिकित्सा शिविरों के दौरान उन्होंने देखा कि वहां रहने वाले लोग बहुत ही कुपोषित हैं और उनकी अवस्था बहुत ही दयनीय है। 2006 में उन्होंने अपनी प्रयासों को गति देने का निश्चय किया । गत 10 वर्षों में कोलकाता निवासियों की सहायता से उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। 122 मेडिकल कैम्प लगाए। कैम्प में चिकित्सकों द्वारा जांच, चश्मा देना, मोतियाबिंद का ऑपरेशन इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। अब तक दक्षिण बंगाल के 9 जिला के करीब 1000 गाँवों के वनवासी परिवार ऐसे Medical Camps से लाभान्वित हो चुके हैं।

योजनाबद्ध तरीके से पिछले 6 वर्षों में इन्होंने 500 से अधिक वर्षा जल संग्रहण के लिये कई आकार के जलाशय बनवाए हैं जिसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई एवं वर्ष में एक से अधिक फसल उत्पादन संभव हुआ। इस प्रकल्प में IIT खड़गपुर के कृषि एवं Food Processing विभाग के प्राध्यापकों ने तकनीकी सहायता प्रदान की।

सतत् विकास के पांचों स्तंभ पर आधारित कार्य

वर्षा जल संरक्षण के प्रकल्प की सफलता के बाद खड़गपुर के पास पाथेरहुड़ी गांवों में एक अद्भुत प्रयोग किया गया। वहां के 70 वनवासी परिवारों को इन्होंने तीन से चार बिना दूध देने वाली गायें प्रदान की। उनके घरों में छोटे बायोगैस प्लांट लगवाए, उन्हें जैविक खाद एवं कीटनाशक बनाने की पद्धति सिखाई, जो कि गोबर एवं गोमूत्र से बनाया गया था। इसके अलावा उन्हें फलों के पेड़ लगाना, सब्जी उगाना एवं दिनचर्या के उपयोग की कई चीजें जैसे कि दंत मंजन, राख, साबुन इत्यादि बनवाया। इस प्रकार उन लोगों के खर्चे कम हो गए और उनकी आमदनी दुगुनी हो गई।

इसके बाद 1200 किसानों के खेतों में 1,00,000 से अधिक फल के पेड़ों का वृक्षारोपण करवाया गया। 200 किसान परिवारों में पोषण वाटिका बनवाई गई। 100 से अधिक सेल्फ हेल्प ग्रुप एवं फार्मर क्लब से संपर्क साधा। अब तक 50 पांच दिवसीय गौ ग्राम विकास प्रशिक्षण वर्ग में 1000 से अधिक ग्रामवासियों को प्रशिक्षित किया है।

कौशल विकास के क्षेत्र में खड़गपुर के पास कोश्यारी प्रखन्ड में कई 20 दिवसीय कंप्यूटर एवं सिलाई प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किए गये।

अब इस योजना को पूरे पश्चिम मेदनीपुर एवं झाड़ग्राम जिलों के 500 गांवों एवं 5000 से अधिक परिवारों में अगले एक साल में लागू करने का संकल्प लिया हैं। अगले 2 वर्षों में इस योजना को अन्य जिलों में भी स्थापित करने का लक्ष्य है।

कल्याण आश्रम परिवार श्री निर्मल जी के दीर्घायु और स्वस्थ रहने की मंगलकामना व्यक्त करता है। परमेश्वर से प्रार्थना है कि श्री निर्मल जी अपने संकल्प-धन से समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहें।

पसीने की स्याही से जो लिखते हैं इरादों को,
उनके इतिहास के पन्ने कभी कोरे नहीं होते.....
ऐसे ही हैं हमारे निर्मल जी अग्रवाल। ■

आदरणीय राष्ट्रपति जी की प्रेरणादायक उपस्थिति में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा एक नया विद्यालय भवन और नया छात्रावास जनपद सोनभद्र को प्राप्त हो रहा है।

यह वनवासी समुदाय के हजारों बच्चों को नई दिशा देने, उनके जीवन में व्यापक परिवर्तन लाने का कार्य करेगा।

जीवन को ऊंचा उठाने का मार्ग है दान-विजया जी उर्मलिया

- शशि मोदी, सह-संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर महिला समिति

दाता प्रतिगृहीता च शुद्धि र्देयं च धर्मयुक्।
देशकालौ च दानानामङ्गन्येतानि षड्विदुः।।

दाता, लेनेवाला, पावित्र्य, देय वस्तु, देश, और काल – ये 6 दान के अंग हैं।

बाल विदुषी विजया जी उर्मलिया की ओजस्वी वाणी कल्याण आश्रम के कार्यकर्त्ताओं के आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर प्रवहमान रहती है।

इसी श्रृंखला में मकर संक्रांति के पावन पर्व के अवसर पर विजया जी उर्मलिया ने दान के विशेष महत्त्व को स्पष्ट किया। आइए कल्याण भारती के इस अंक के माध्यम से हम विजया जी की पावन वाणी को हृदयंगम करें। दान के महत्त्व को समझते हुए आध्यात्मिक सागर में गोते लगाएँ।

अपने हिन्दू सनातन परंपरा में दान का क्या महत्त्व है? हमारे सनातनी हिन्दू परंपरा में जब भी दान दिया जाता है उस दान का सबसे पहला सूत्र यह है कि दान की परंपरा को आत्मसात करने के पश्चात ही दान की परंपरा का महत्त्व समझा जा सकता है। श्रीमद् भगवत गीता में सात्विक दान को परिभाषित करते हुए कहा गया है -

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।

विजया जी अपनी ओजस्वी वाणी में कहती हैं कि दान देना किसी पर दया करना नहीं है।किसी पर भी उपकार करना नहीं है। दान देना हमारा अनिवार्य कर्तव्य है। जब इस भाव को आत्मसात कर लेते हैं और कर्तव्यबोध की भावना अपने भीतर ले आते हैं तब दान की प्रक्रिया का सहीं भाव उसमें जाता है।

अपने वनवासी समाज के लिए कुछ देने की बात के पीछे अपने पूर्वजों का और वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़े महानुभावों का जो भाव रहा है वो यह है कि जब भी हम वनवासी समाज के लोगों से संबंध जोड़ते हैं, नगर के रहने वाले लोग उनसे जुड़ते हैं कुछ वस्तुएँ देते हैं तो यह हमारा एक अनिवार्य कर्तव्य तो है ही साथ ही हम राष्ट्रीय सुरक्षा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। विचार करके देखने में आता है कि हमारी भारतभूमि पर रहने वाले 12 करोड़ वनवासी भ्राता–भगिनी देश की सीमाओं से सटे इलाकों में ही रहते हैं। हम अपनी देशभक्ति कई रूपों में प्रकट करते हैं। वास्तव में देशभक्ति का कार्य वनवासी ही करते हैं। सीमाओं से सटे इलाकों में रहना आसान नहीं होता है। कठिनाइयों से भरा जीवन जीते हुए भी अपनी संस्कृति, अपना स्वाभिमान बचाकर देश की सुरक्षा करते हैं। हमारे

देश की सुरक्षा का केन्द्रबिंदु हमारा वनवासी समाज है।

दान शब्द का अर्थ हमारे शास्त्रों में दिया गया है। दान शब्द का यह अर्थ कभी नहीं है कि हम किसी व्यक्ति की कोई कमी दूर कर रहे हैं। बल्कि पात्र का स्वाभिमान जगना चाहिए। इसलिए हमारे शास्त्रों में सदा यही दर्शाया गया है कि दान देने वाला हमेशा छोटा बनकर देता है और ग्रहण करने वाला सर्वदा पूजनीय माना जाता है। वह ग्रहण करता है यही उसका बड़प्पन है।

वस्तुओं का दान, धनराशि का दान, वस्त्रों का दान यह तो दान का एक अंग है ही किंतु दान के माध्यम से स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाना हमारे दान का उद्देश्य होना चाहिए। यह प्रयास हम सभी कार्यकर्ताओं का रहता है।

दान परंपरा का एक अत्युत्तम उदाहरण इच्छवाकु वंश में मिलता है। घटना है ...सीता जी विवाहोपरांत अपने ससुराल अयोध्या के महल में प्रवेश करती हैं। परंपरानुसार रघुवंश की पट्टमहिषी महारानी कौशल्या माता ने सीता जी को परंपरा से मिला हुआ **रानी हार** सीता जी को देकर यह संदेश देती है कि अब उन्हें इस परंपरा का निर्वाह करना होगा, इधर कैकेयी भी पीछे नहीं रही उन्होंने अपना **स्वप्न महल** सीता जी के लिए दान कर दिया। सुमित्रा जी ने आगे ब़ढकर अपने पुत्र **लक्ष्मण** को सीता जी की सेवा में समर्पित कर दिया। दान स्वीकार करने वाला जिस विनम्रता और हर्ष के साथ स्वीकार करता है, वही महत्त्वपूर्ण होता है।

वनगमन के लिए चलते–चलते प्रभु राम ने वनवासी समाज को गले लगाया। निषादराज हों, केवट हों या माता शबरी हों सबको राम ने अपनाया।

वस्तुत: बिना संवेदना के दान का भाव जागृत नहीं होता। जैसे सूखी माटी पर बोया बीज अंकुरित नहीं होता उसी प्रकार जिस व्यक्ति के हृदय में संवेदना की आर्द्रता न हो उसके हृदय में प्रेम नहीं पनप सकता ओर न ही अपने समाज बंधुओं के प्रति दान का भाव जागृत हो सकता है। मनुष्य की बढती भोग एवं स्वार्थ-वृति ने उसे बहुत कमजोर बनाया हैं, मानवता का अहित किया है। जीवन विकास का सूत्र है दायित्व बोध के साथ सहयोग की मनोवृति का विकास। ■

मिशन विद्या-2

कई दिनों से विद्यालय बंद है, विद्यार्थी प्रतीक्षा में है कि कब शुरू होंगे! ऐसे में दादरा नगर हवेली के शिक्षा विभाग ने मिशन विद्या-2 का अभियान चलाया। इस निमित्त दिलीपभाई पाटकर करजगाम के खाडीपाडा पहुंच गए। प्राकृतिक वातावरण में वारली जनजाति के 10-15 बालक-बालिकाओं को एकित्रत कर पढाना शुरू किया। एक अनुकरणीय पहल है, अभिनंदन दिलीपभाई का।

इसमें कुछ कठिनाइयां अवश्य है। परन्तु निष्पाप आनंद भी है। आप अनुभव कर के देखें ।

दिलीपभाई वनवासी कल्याण आश्रम दादरा नगर हवेली के प्रचार प्रमुख है।

प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद मकर सक्रांति पर दिखा कार्यकर्ताओं का उत्साह

- तारा माहेश्वरी

निश्छल, निर्मल, पवित्र हृदय वनवासी समाज का सर्वांगीण विकास ही कल्याण आश्रम का लक्ष्य है। उनकी संस्कृति, उनकी अस्मिता और उनके स्वाभिमान की रक्षा के लिए कल्याण आश्रम प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर कैम्प लगाता है। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भगिनी–बंधु उत्साहपूर्वक इन कैम्पों में भाग लेते हैं। जनजागरण करते हैं। समाज को वनवासियों की आवश्यकताओं से अवगत कराते हैं। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन–संग्रह, वस्तु–संग्रह के आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस वर्ष कोरोना महामारी के घोर संकट के होते हुए भी कार्यकर्ताओं के उत्साह में कोई कमी नहीं रही।

कोलकाता हावड़ा महानगर में कुल 70 कैम्प लगे। विपुल धनराशि और असंख्य वस्तुएँ दानस्वरूप मिलीं। इस संगृहीत सामग्री को देशभर के जनजातीय समाज को उनकी आवश्यकता की अनुरुप भेज दिया जाता है।

मकर संक्रांति पर्व में प्रतिवर्ष लगने वाले कैम्पों से हरबार प्रेरक–प्रसंग मिल जाते हैं। ये प्रसंग कल्याण भारती के लिए अनमोल मोती होते हैं तथा कर्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा बन जाते हैं।

इस बार भी ऐसा ही हुआ। अनेक दिल को छू ने वाले प्रसंग घटित हुये। इनमें से एक का उल्लेख कर में इस आलेख को बिराम दूँगी। काकुडगाछी समिति ने **स्वर्णमणि कॉम्प्लेक्स** में मकर सक्रांति पर कैंप लगाया। अपने कार्य के ईश्वरीय होने का प्रमाण मिला। सुरेंद्र पिट्टी नामक एक सज्जन ने अपना

बड़ाबाजार समिति

सॉल्टलेक समिति

फोल्डर देखते ही इस कार्य के प्रति अपना अनुराग और जिम्मेदारी दिखाते हुए तत्काल 7 विद्यालयों का अनुदान अर्थात 1,15,000 रुपये प्रदान किए। सुरेंद्र जी का यह अनुदान वनवासी समाज के प्रति

संजीवा टावर

गोवाबागान समिति

उनकी प्रतिबद्धता को तो दर्शाता ही है साथ ही सभी संपर्कित मित्र बंधुओं के हृदय में एक पवित्र प्रेरणा का संचार भी करता है। सुरेन्द्र जी के प्रति आभार।

श्रेष्ठीजन में श्रेष्ठ हैं, दानवीर सरताज।
सदा आपके सर सजे, दानपति का ताज।।

कुल मिलाकर कोलकाता एवं हावड़ा महानगर में वनवासी बंधुओं के निमित्त लगाए जाने वाले सक्रांति कैंपों के माध्यम से एक पवित्र शुद्ध सात्विक वातावरण का सृजन होता है। मानव जाति एक है। सभी इंसान आपस में भाई भाई हैं। इसलिए सब में मानवीय एकता का विकास होना चाहिए आदि बातों को इन संक्रान्ति कैंपों के माध्यम से बहुत सहज रूप से समाज बंधुओं को प्रेषित किया जा रहा है। मकर संक्रान्ति सही अर्थों में सम्यक क्रांति बन रही है। ■

अनुकरणीय

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

राह में मुश्किल होगी हजार,
तुम दो कदम बढाओ तो सही,
हो जाएगा हर सपना साकार,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
मुश्किल है पर इतनी भी नहीं, कि तू चल ना सके,
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं,
कि तू पा ना सके,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

मंजिल अगर तय है तो कोई भी शक्ति वहाँ तक पहुँचने से किसी को भी नहीं रोक सकती। सामर्थ्य अधिक हो या कम, शक्ति प्रचुर हो या अल्प-इच्छाशक्ति के आगे पहाड़ भी हिल जाते हैं।

स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते हैं,
रोटी क्या अंबर वाले सारे श्रृंगार मिल सकते हैं।

ऐसे ही व्यक्तित्व की धनी है **सुश्री अंजू दास** जिनका

आवास है झाड़–फूस का किंतु महलों के कंगूरे भी श्रद्धा से नत होते हैं जब कुटिया की निवासिनी अंजू की ओर अपनी दृष्टि डालते हैं, जिनका कर्मक्षेत्र है दूसरों के घरों में काम–काज करना। जिनका नहीं है कोई बड़ा प्रतिष्ठान, जिन्हें नहीं लुभाती आज की चकचौंध से भरी ये दुनिया। वे तो सिर्फ और सिर्फ अपने जीविकोपार्जन की एक-एक पाई दान कर देना चाहती हैं, समाज के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैचारिक उत्थान के लिए।

समाज के उत्थान में लगे हर संगठन पर अपना स्नेहसिंचित सहयोग लुटाती रहती हैं। राममंदिर आंदोलन से जुड़ी उत्साहवर्धक अनेक कथाएँ सुनकर हमने अपने कर्णों को पवित्र किए हैं। सुश्री अंजू ने भी अपनी आजीविका से मंदिर निर्माण हेतु एक हजार रूपए समर्पित कर हमारे समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

काम छोटा या बड़ा नहीं होता, बड़ा होता है उसका उद्देश्य। घरों में साफ – सफाई का काम करके गुजारा चलाने वाली अंजू बहन की समर्पण कथा यहीं नहीं पूरी होती है। अपनी संघर्षपूर्ण आजीविका की लगभग संपूर्ण आय समाज के विभिन्न प्रकल्पों को भेज देती हैं। मकर संक्रान्ति पर पन्द्रह हजार रूपए की धनराशि कल्याण आश्रम में वनवासी बन्धु–भगिनी के विकास के लिए समर्पित की, पन्द्रह हजार की एकमुश्त धनराशि पिंजरापोल सोसाइटी में गोवंश के कल्याण के लिए दान कर दी। इसी प्रकार पाँच हजार रूपए ब्रह्मकुमारी, अंधविद्यालय और वृद्धाश्रम में बाँट दिये।

साधुवाद, धन्यवाद, आभार सारे शब्द अपनी सीमा में छोटे पड़ जाते हैं, ऐसी दानवीरा की गाथा लिखने के लिए।

किन छंदों में देवि तुम्हारा करूँ आज मैं अभिनन्दन....
शब्द मंद पड़ जाते हैं, रुक जाती है स्वरधारा।।

दिनांक 21 मार्च 2021 विचार मंच के द्वारा प्राप्त सम्मान राशि में अपनी तरफ से 31 हजार रुपये मिलाकर उसको कल्याण आश्रम के सेवार्थ समर्पित कर दिया हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री निर्मल अग्रवाल ने। कल्याण आश्रम आपके प्रति स्नेह अभिसिंचित आभार व्यक्त करता है।

कठिन पंथ को देख मुसकाते सदा
संकटों के बीच वे गाते सदा।
है असंभव कुछ नहीं उनके लिए
सरल संभव कर दिखाते वे सदा।। ■

बेलपहाड़ी छात्रावास के पूर्व छात्र दक्षिण बंग प्रांत के अध्यक्ष चयनित

- उत्तम महातो, संगठन मंत्री, दक्षिण बंग प्रांत

आओ हम...
आगाज करें
नए सपने, नई उमंगों का
आओ हम...
पुष्प बिछाएं
शिला पथ पर, आशाओं का
आओ हम...
विश्वास रखें
उन्नत अवसर, सपनों का

नए सपने और नई उमंगों के प्रतीक डॉक्टर चुनाराम मुर्मू का दक्षिण बंग पूर्वांचल कल्याण आश्रम के अध्यक्ष के रूप में चयन सचमुच हम सबके लिए आह्लादकारी संवाद है। सामान्य रंग रूप वाले साधारण से दिखने वाले चुनाराम जी में कुछ असाधारण बात है। बेल पहाड़ी जिले के काला पठार गांव में 6 नवंबर 1977 को जन्मे चुनाराम जी की प्राथमिक शिक्षा अपने गांव के **अस्टाजुरी प्राइमरी स्कूल** में हुई। माध्यमिक शिक्षा के लिए पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा संचालित **बेलपहाड़ी छात्रावास** में भर्ती हुए। छात्रावास की नियमित दिनचर्या एवं संस्कारक्षम परिवेश का चुनाराम जी के बाल मन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। यहीं पर उनके बाल मन में राष्ट्रभक्ति के संस्कारों का बीजारोपण हुआ। छात्रावास में प्रतिदिन किए जाने वाले प्रात: स्मरण प्रार्थना एवं मंत्रों को उन्होंने न सिर्फ कर्णेंद्रियों से सुना अपितु हृदयंगम भी किया। अपने देश धर्म और संस्कृति के लिए मेरा भी महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए ऐसा विचार उनके बाल मन में कई बार उठता था। उनके जैसी संवेदनशीलता और वाक्चातुर्य उनके समकालीन छात्रों में कम ही पाया जाता है।

बाल्यकाल से ही चुनाराम जी मेधावी छात्र रहे। अपनी मेहनत, निष्ठा और समर्पण के बल पर उन्होंने कोलकाता नेशनल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। संप्रति आप पुरुलिया के रघुनाथपुर एसडी अस्पताल में मेडिकल ऑफिसर के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। व्यस्तताओं के बावजूद आपके जीवन का लक्ष्य वनवासी समाज का सर्वांगीण विकास है। बंगाल का वनवासी समाज अपने धर्म संस्कृति एवं परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण में अपना योगदान दे सके यही चुनाराम जी के जीवन का लक्ष्य है। यथासंभव प्रांत की सभी बैठकों एवं कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं एवं संगठन के विकास हेतु नवीन योजनाओं एवं कल्पनाओं के साथ उत्साहपूर्वक अपनी बात रखते हैं। कल्याण आश्रम परिवार ऐसे समर्पित निष्ठावान युवा अध्यक्ष का हृदय से अभिनंदन करता है। आपके कुशल नेतृत्व में संगठन विकास के नव सोपानो पर आरुढ हो यही शुभकामना है। ■

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कोलकाता महानगर महिला प्रमुख इंदु नाथानी का सम्मान

कोलकाता महानगर महिला प्रमुख श्रीमती इंदु नाथानी को उनके बेहतरीन सेवा कार्यों के लिए भारत चेंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा extra ordinary and exceptional achiever के सम्मान से सम्मानित किया गया। इंदु जी वर्षों से मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी में अपनी नि:स्वार्थ सेवाएं दे रही है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम महानगर महिला समिति की तो वे सुदृढ स्तंभ ही है। शांत, सौम्य, मृदुभाषी, साहित्यिक और आध्यात्मिक रुझान वाली इंदु जी ने हिम्मत, लगन और जज्बे से अपना मुकाम हासिल किया है। संगठन द्वारा संचालित सभी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को सफल बनाने में उनकी कल्पनाशीलता एवं समर्पण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा को काव्य की भाषा में कहा जाए तो-

बिखरे जीवन को समेटना ही
उसका श्रृंगार देखा है।
सबमें विश्वास भरते देखा है।
अपनी राहें, अपनी मंजिल खुद
उसे तय करते देखा है।

उनका सम्मान संगठन से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्ता का सम्मान है, समर्पण और निष्ठा का सम्मान है।सचमुच उन्होंने महिला सशक्तिकरण का एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिससे अन्य महिलाएं प्रेरित होकर आगे बढ़ सके और उनका आत्मविश्वास जागृत हो सके तथा स्वयं को समाज में भी परिभाषित कर सकें। उनके सम्मान से पूरा कल्याण आश्रम परिवार गौरवान्वित है। ■

बोध कथा

महान दार्शनिक सुकरात दर्पण में बार-बार अपना मुंह देख रहे थे। इसी समय उनके कुछ शिष्य वहां आ पहुँचे। शिष्य मंडली उनके इस क्रिया -कलाप को नहीं समझ पा रही थी। कुरुप सुकरात बार-बार दर्पण क्यों देख रहे हैं? आखिर एक शिष्य उनसे पूछ ही बैठा -'गुरुवर दर्पण में अपना चेहरा बार-बार क्यों देख रहे हैं?' सुकरात शिष्य की बातें सुनकर हंस पड़े। फिर गंभीर होकर बोले- 'प्रियवर तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है। मुझे जैसे कुरूप को दर्पण देखने की क्या आवश्यकता है लेकिन मेरे शिष्य दर्पण सबको देखना चाहिए, चाहे वह सुंदर हो या बदसूरत!' शिष्य बीच मैं ही बोल उठा- 'गुरुवर कुरूप तो अपनी वास्तविकता जानता ही है फिर दर्पण देखने से तो भारी कष्ट ही होगा उसे।' सुकरात शिष्य को शांत करते हुए बोले-वत्स! कुरूप को तो दर्पण अवश्य देखना चाहिए क्योंकि उसे अपने उस रूप को देखकर बरबस ध्यान आ जाएगा कि वह कुरूप है। फलस्वरूप अपने श्रेष्ठ कार्यों से उस कुरूपता को सुंदर बना कर ढकने का प्रयत्न करें। सुंदर चेहरे को दर्पण इसलिए देखना चाहिए ताकि ईश्वर ने उसे सौंदर्य दिया है, अत: उसके अनुरूप ही उसे सदैव सुंदर कार्य करना चाहिए। ■

कल्याण भारती के सभी पाठकों को वर्ष प्रतिपदा, चैत्र नवरात्र, श्री रामनवमी, श्री महावीर जयंती एवं हनुमान जयंती की अनेकानेक शुभकामनाएं। यह नव वर्ष आप सबके जीवन में समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य लेकर आए। ■

कविता .....

वन संस्कृति अपनायेंगे हम

- उम्मेद सिंह बैद

वनवासी को अपनायेंगे हम, बन सस्कृति फैलायेंगे हम
भोग भँवर से बाहर आ, त्याग की गंगा बहायेंगे हम!
वन संस्कृति . . .

राम ने जिनको अंग लगाया, ये वनवासी अपने,
कृष्ण साथ में खेले जिनके, ग्वाल बाल सब अपने
बिछड़े हुए ऽ ऽ ऽ... बिछड़े बंधु मिलायेंगे हम।
वन संस्कृति...

वेद पुराण उपनिषद् अपने यन कुटिया में ऊतरे
ऋषि मुनि ज्ञानी और वैरागी, वन आंगन में विचरे
ज्ञान धरम ऽ ऽ ऽ... ज्ञान की गंगा बहायेंगे हम।
वन संस्कृति...

धर्म पे जब जब संकट आया, वनवासी ने बचाया
शिवा प्रताप बीरसा मुण्डा रक्षक बनकर आया
ऋण है बड़ा ऽ ऽ ऽ... ऋण उनका ये चुकायेंगे हम।
वन संस्कृति ...

देश आज, संकट में हैं फिर से अर्थ तंत्र बोझिल है
तंत्र स्वदेशी और वनवासी - एक ही अब मंजिल है।
धरती माँ ऽ ऽ ऽ... प्रकृति की गोद में जायेंगे हम।
वन संस्कृति...

शस्य श्यामला धरती होवे, सदानीरा सरितायें
वन-पर्वत वनवासी झूमें दूर हों सब विपदायें
धरती माँ ऽ ऽ ऽ... पर्यावरण को बचायेंगे हम
वन संस्कृति...

धर्म ध्वजा फहरायेंगे हम - विश्व गुरु कहलायेंगे हम
मानवता को बचायेंगे हम - सृष्टि समस्त बचायेंगे हम
त्याग की गंगा बहायेंगे हम, बिछड़े बंधु मिलायेंगे हम
ऋण प्रभु का चुकायेंगे हम - प्रकृति की गोद में जायेंगे हम। ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग, 2 तल्ला, कमरा नं. 51
कोलकाता - 700007, दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792